युद्ध-विराम तथा अन्य मामलों के बारे में वक्तव्य

STATEMENT RE: CEASE-FIRE AND OTHER MATTERS

Dr. Ram Manohar Lohia (Farrukhabad) : On a point of order, Sir.

Mr. Speaker : Not now. He may raise it after the statement.

Dr. Ram Manohar Lohia : It is alright Sir.

प्रधान मंत्री तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री लाल बहादुर शास्त्री) : मैं भारत-पाकिस्तान संघर्ष संबंधी सुरक्षा परिषद् के दिनांक 20 सितम्बर, 1965 के संकल्प की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं। यह संघर्ष 5 अगस्त, 1965 को आरम्भ हुआ था जब पाकिस्तान ने युद्धविराम रेखा के पार हजारों घुस-पैठियों को भेज कर भारत पर जोरदार आक्रमण किया था। [**पुस्तकालय में रखी गई। देखिय संख्या एल० टी० 4932/65।**] जैसा माननीय सदस्यों को इससे पता चलेगा, सुरक्षा परिषद् के आदेशानुसार दोनों सरकारों को युद्ध-विराम के आदेश जारी करने थे जो भारतीय समय के अनुसार 22 सितम्बर, 1965 के मध्याह्नोपरान्त 12-30 से लागू किया जाना था। मैंने अपनी सरकार के विचार संयुक्त राष्ट्र के महासचिव को 14 तथा 15 सितम्बर को भेजे गये अपने पत्रों में स्पष्ट कर दिये थे। इसलिये सुरक्षा परिषद् का यह संकल्प प्राप्त होने पर हमने महासचिव को एक पत्र लिखा कि हम केवल एक ही युद्ध-विराम के लिये जो नियत समय और तिथि से लागू हो, आदेश तभी जारी करने के लिये तैयार होंगे, यदि पाकिस्तान भी ऐसा करने के लिये तैयार हो। इस पत्र की एक प्रति भी सभा-पटल पर रखी दी गई है।

आज प्रातःकाल ही महा सचिव का एक संदेश हमें मिला जिसमें उन्होंने सलाह दी थी कि हम अपनी ओर से एकपक्षीय युद्ध विराम की घोषणा कर दें और यदि दूसरी ओर से आक्रमण हो तभी कुछ कार्यवाही करें। स्पष्ट है, यह बात हमें मान्य नहीं हो सकती थी और यह बिल्कुल असम्भव था। हमने अपने संयुक्त राष्ट्र स्थित प्रतिनिधि को तदनुसार महा सचिव को सूचित करने का आदेश दिया।

पाकिस्तानी विदेश मंत्री की प्रार्थना पर सुरक्षा परिषद की एक आपाती बैठक बुलाई गई जिसमें उन्होंने पाकिस्तान की ओर से यह घोषणा की कि वे भी युद्ध विराम और युद्ध संबंधी गतिविधियों को बन्द करने को तैयार हैं। अतः हमने अपने क्षेत्रीय कमाण्डरों को कल प्रातः 3-30 बजे तक पूर्ण युद्ध विराम करने के आदेश जारी किये जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के इस संकल्प में अन्य कई बातों का भी उल्लेख है जिन पर बाद में विचार किया जाएगा। तथापि सरकार की नीति सभा को समय समय पर बताई जाती रही है और इसका उल्लेख संयुक्त राष्ट्र के महासचिव से हाल ही में हुये पत्र व्यवहार में भी किया गया है। इन समस्यों पर और भी विस्तारपूर्वक विचार किया जाएगा और इस प्रयोजन के लिये हमारा संयुक्त राष्ट्र स्थित प्रतिनिधि महासचिव से लगातार सम्पर्क बनाये रखेगा।

शान्ति अच्छी है और अब युद्धविराम हो जाएगा परन्तु खतरा अभी बना हुआ है क्योंकि पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने वहां एक धमकी भी दी है इसलिये हमें बहुत सावधान और सतर्क रहना है।

राष्ट्र सबसे बड़ी परीक्षा से गुज़र रहा है और हमने सारे विश्व को बता दिया है कि देश का हर नागरिक चाहें वह हिन्दु हो या मुसलमान, सिख हों या ईसाई, सर्वप्रथम भारतीय हैं और मोर्चे पर कोई भी बलिदान दे सकते हैं और दिया है। अपनी सशस्त्र सेनाओं को संसद् और पूरे राष्ट्र की ओर से मैं श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं। उन्होंने अपने शौर्य और साहस से जनता में नया आत्मविश्वास पैदा किया है। जिन्होंने अपने प्रियजनों को मोर्चों पर भेजा है उन्होंने देश की स्वतंत्रता की रक्षा में अपूर्व योगदान दिया है जिसका आभार राष्ट्र सदा याद रखेगा। परीक्षा की इस कठिन घड़ी में मैं 47 करोड़ व्यक्तियों में से प्रत्येक को इस चुनौती का डट कर मुकाबला करन पर बधाई देता हूं।

रुस के मंत्रि परिषद के प्रधान श्री कोसिजिन के भारत-पाकिस्तान संबंधों को सुधारने के प्रयत्नों का हम स्वागत करते हैं और मैंने उन्हें अपनी सहमति से सूचित कर दिया है।

श्री बलवन्तराय मेहता जिस विमान में यात्रा कर रहे थे वह पाकिस्तानी विमान द्वारा मार गिराया गया था—यह बात मौके पर जांच करने पर ज्ञात हुई है। एक गैर-लड़ाकू असैनिक विमान का इस प्रकार गिराया जाना बिल्कुल अमानवीय कार्यवाही है जिस की सभी को निन्दा करनी चाहिये। श्री मेहता, उनकी पत्नी और अन्य लोग जो उनके साथ यात्रा कर रहे थे देश की स्वतंत्रता पर बलिदान हुये हैं और उनको सदा स्मरण किया जाएगा।

हमें अब भी चीनी चुनौती का सामना करना है। उसकी सेनाओं ने सीमा पर कई स्थानों पर उत्तेजनात्मक कार्यवाही कर दी है और उन्होंने डोंग्चुईला तथा नाथुला पर सुनिश्चित और परिसीमित सीमा का उल्लंघन किया है। चीन उल्टे हम पर ही आरोप लगाता है और उसके पत्र अशिष्ट भाषा से भरे होते हैं। चीनी पत्रों के उत्तर समय समय पर सभा-पटल पर रखे जाते रहे हैं। हम ने अपनी सेना को स्पष्ट आदेश दे रखा है कि वे अतिक्रमणकारियों को खदेड़ बाहर करे।

हम चीनी गतिविधियों और अन्य उत्तेजनात्मक कार्यवाहियों को बहुत ही गम्भीर समझते हैं। हमने चीन से यह अनुरोध भी किया है कि वह युद्ध और धमकियों का मार्ग छोड़कर भारत के साथ उसकी भान्ति ही सद्भावपूर्ण तथा शान्तिप्रिय रवैया अपनायें। आशा है कि चीन अब भी हमारे सुझाव पर सहमत होगा और एक बड़े युद्ध को रोक देगा।

क्योंकि हम नहीं जानते कि चीन आगे क्या करने वाला है इसलिये हमें सतर्क रहना होगा। हमने अपनी स्वतंत्रता को दी गई इस चुनौती का मुकाबला करने का दृढ़ संकल्प ले रखा है।

Dr. Ram Manohar Lohia : Now I might be allowed to raise my point of order. Article 105(3) of the Constitution lays down that where the powers, privileges and immunities of each House of Parliament and of Members of Parliament and Committees thereof shall be such as may from time to time be defined by Parliament, by law and until so defined, shall be those of the House of Commons of the Parliament of the U. K. and of its members and Committees,, at the Commencement of this Constitution.

In May 1940, when Norway had fallen and the British people were facing a great crisis, even then an adjournment motion put forward by the Opposition was admitted. I will quote only the harmless expression therefrom.....

Mr. Speaker : He may come to his point of order now.

Dr. Ram Manohar Lohia : The Lok Sabha is in session since 16th August and now it will adjourn soon. A war started and is going to end but we are not allowed to discuss any thing here.

I will quote one instance each for their Adjournment motions, Questions and Debates in the House of Commons and then request you.....

Mr. Speaker : I agree that this House has the same rights as those of the the House of Commons there but it is also not necessary that we must follow them in all respects.

Shri Madhu Limaye (Monghyr) : He had referred to the privileges.

Mr. Speaker : I had taken the sense of the House.

Dr. Ram Manohar Lohia : The privileges of Members have been defined by Parliaments by Law and I have a right to quote instance for British House of Commons regarding their privileges during war.

Mr. Speaker : What privileges do you want ? What are they ?